# भारतीय विद्वानों के मानवता पर मधुर विचार...

प्रस्तुति :
**डा० रफ़ीक़ अहमद**

✷ ✷ ✷

हिन्दू और मुसलमान दोनों 1,000 वर्षों से हिन्दुस्तान में रहते चले आते हैं, लेकिन अभी तक एक दूसरे को समझ नहीं सके । हिन्दू के लिए मुसलमान एक रहस्य है, मुसलमान के लिए हिन्दू एक मुअम्मा । न हिन्दू को इतनी फ़ुरसत है कि इस्लाम के तत्वों की छानबीन करे, न मुसलमान को इतना अवकाश कि हिन्दू–धर्म–तत्वों के सागर में ग़ोते लगाए, दोनों एक दूसरे में बेसिर–पैर की बातों की कल्पना करके माथा फुटौवल करने पर आमादा रहते हैं । हिन्दू समझता है दुनिया भर की बुराइयाँ मुसलमानों में भरी हुई है, इनमें न दया है, न धर्म, न सदाचार , न संयम । मुसलमान समझता है हिन्दू पत्थरों को पूजने वाला, गरदन में धागे डालने वाला, माथा रंगनेवाला और दाल–भात खाने वाला पशु है । दोनों एक–दूसरे के साये से बचते हैं । और दोनों में जो बड़े से बड़े धर्माचार्य हैं वह इस भेदभाव में सबसे आगे हैं । मानों द्वेष और विरोध ही धर्म का प्रधान लक्षण है । हम इस समय हिन्दू–मुस्लिम वैमनस्य पर कुछ नहीं कहना चाहते । मौलाना शौकत अली के साथ हमारा भी यह विश्वास है कि यह दशा अस्थायी है और वह समय दूर नहीं है जब हिन्दू और मुसलमान दोनों अपनी ग़लती पर पछताएँगे, और अगर मनुष्यता और सज्जनता से प्रेरित होकर नहीं तो आत्मरक्षा के लिए संयुक्त होना आवश्यक समझेंगे।

**(महान साहित्यकार एवं लेखक मुन्शी प्रेमचन्द जी)**

✷ ✷ ✷

आम तौर पर लोग इस ग़लतफ़हमी में फंसे हुए हैं कि दस भिन्न–भिन्न विचारों वाले लोगों की एक–दूसरे को काटने वाली बातों को सही ठहरा देना रवादारी और सहिष्णुता है । हालांकि वास्तव में यह

सहिष्णुता नहीं है, बल्कि मिथ्याचार है । सहिष्णुता का अर्थ यह है कि जिन लोगों की आस्थाएं या कर्म हमारे विचार में ग़लत हैं उनको हम सहन करें । उनकी भावनाओं को देखते हुए उन पर कोई ऐसी टिप्पणी न करें, जो उनको दुख पहुंचाने वाली हों, और उन्हें उनकी आस्थाओं से फेरने या उनके अमल से रोकने के लिए ज़ोर–ज़बरदस्ती न करें । इस तरह का संयम और इस तरीक़े से लोगों को आस्था और कर्म की आज़ादी प्रदान करना न केवल यह कि प्रशंसनीय है बल्कि विभिन्न विचारों वाले संगठनों में शांति और सुरक्षा बनाये रखने के लिए ज़रूरी है ।

**(विख्यात इस्लामी विचारक मौलाना मौदूदी रह०)**

✷ ✷ ✷

सज्जनो ! यदि दिल को चीर कर या आँसुओं को बहाकर देश के पर्वतों, वृक्षों और नदियों के ज़रिये हम आपको इस देश की कराह सुनवा सकते तो अवश्य इस कराह को आप तक पहुँचाते। यदि वृक्ष और पशु बोलते तो वे आपको बताते कि इस देश की अन्तरात्मा घायल हो चुकी है। उसकी प्रतिष्ठा और ख्याति को बट्टा लगाया जा चुका है और वह पतन एवं अग्नि परीक्षा के एक बड़े खतरे में पड़ गयी है। आज सन्तों, धार्मिक लोगों, दार्शनिकों, लेखकों और आचार्यों को मैदान में आने, नफ़रत की आग बुझाने और प्रेम का दीप जलाने की आवश्यकता है। इस देश की नदियाँ, पर्वत और देश के कण–कण तक आपसे अनुरोध कर रहे हैं कि आप इंसानों का रक्तपात न कीजिए, नफ़रत के बीज मत बोइये, मासूम बच्चों को अनाथ होने से और महिलाओं को विधवा होने से बचाइये। भारत को जिन विभूतियों ने स्वाधीन कराया था, उन्होंने अहिंसा,

सद्व्यवहार और जनतंत्र के पौधों की सुरक्षा का दायित्व हमें सौंपा था और निर्देश दिया था कि इन पौधों को हाथ न लगाया जाये, किन्तु हम उनकी सुरक्षा में असफल रहे। इसके फलस्वरूप हिंसा और टकराव का दानव हमारे सामने मुँह खोले खड़ा है। नफ़रत और हिंसा की आग हमारी उन समस्त परम्पराओं को जला देने पर तत्पर है, जिनके लिए हम समस्त संसार में विख्यात थे और आदर एवं प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखे जाते थे। हमारी गलतियों ने बाहरी देशों में हमारा सिर नीचा कर दिया और हमारी स्थिति यह हो गयी कि हम मुँह दिखाने योग्य नहीं रह गये।

नफ़रत की इस आग को बुझाइये और याद रखिये ! जब यह हिंसा किसी देश या कौम में आ जाती है तो फिर दूसरे धर्म वाले ही नहीं, अपनी ही कौम और धर्म की जातियाँ और बिरादरियाँ, परिवार, मुहल्ले, कमज़ोर और मोहताज इंसान और जिनसे लेशमात्र भी विरोध हो, उसका निशाना बनते हैं।

**(महान इस्लामी विद्वान मौलाना अली मियाँ रह०)**

यह एक हक़ीक़त है और बहुत ही दर्दनाक हक़ीक़त है कि हमारे देश में धर्म के नाम पर बार–बार ऐसा वातावरण बना दिया जाता है कि अवाम का एक वर्ग बुद्धि एवं विवेक को त्याग बैठता है और दंगों, हंगामों, हत्या एवं तोड़–फोड़ का एक सिलसिला शुरू हो जाता है। दंगों और हंगामों की आग जहाँ भड़कती है, प्रायः वहीं तक सीमित नहीं रहती, बल्कि दूर–दराज़ के स्थान भी इसकी लपेट में आ जाते हैं।

यह स्थिति किसी विशेष धर्म के लिए ही नहीं, बल्कि सभी धर्मों के लिए चिन्तनीय है। इसके कारण

धर्म पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। देश के गंभीर लोग यह सोचने पर मजबूर हो सकते हैं बल्कि हो रहे हैं कि धर्म एक जुनून (उन्माद) है। यह केवल तोड़फोड़ एवं लड़ाई–झगड़े का माध्यम है। इससे मनुष्य के कल्याण की आशा नहीं की जा सकती और इससे दूर रहने में ही भलाई है। हो सकता है यह धर्म के विरुद्ध एक षड्यन्त्र और उसे बदनाम करने का तरीक़ा हो। इस पर धार्मिक वर्ग को गंभीरता से सोचना चाहिए और इससे बचाव का प्रयास करना चाहिए।

**(महान इस्लामी लेखक मौलाना जलालउद्दीन उमरी)**

✷ ✷ ✷

दानशीलता, विशालहृदयता और प्रेम – इसी का नाम जीवन है। जहाँ कंजूसी, संकीर्णता और नफ़रत पाई जाती हो, वहाँ जीवन का नहीं मृत्यु का दौर–दौरा होता है। मरे हुए इंसान से हम कोई आशा नहीं कर सकते। सारी आशाएँ जीवन से सम्बद्ध हैं। व्यक्तित्व की पूर्णता का रहस्य वास्तव में दानशीलता और उदारहृदयता में निहित है। यह ऐसी वास्तविकता है, जिसकी ओर से साधारणतया लोग लापरवाह दिखाई देते हैं। यही कारण है कि वे जीवन के वास्तविक सुख–चैन से वंचित रह जाते हैं। उन्हें वह शान्ति और संतोष प्राप्त नहीं होता तो हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है। दीन या धर्म ने हमेशा इस बात की शिक्षा दी है कि हर प्रकार की तंगनज़री और तंगदिली से स्वयं को आज़ाद रखें। दीन और धर्म की आधारशिला वास्तव में हमारी आवश्यकताओं और नैसर्गिक इच्छाओं पर ही रखी गयी है।

परस्पर प्रेम और उदारता की परिणति है कि हम एक दूसरे के शुभ चिन्तक हों। सभी लोगों की

भलाई और कल्याण पर ध्यान दें। हम किसी का भी अहित न चाहें। अच्छे इंसान वही हैं जो उपद्रव और बिगाड़ से घृणा करते हैं और चाहते हैं कि संसार में शान्ति की स्थापना हो। वह उसके लिए हर सम्भव प्रयास करते हैं कि इन्सान आपस में मिल जुल कर रहें और हर प्रकार के दंगे और बिगाड़ से दूर रहें। धर्म जो प्रेम की शिक्षा देने आया हो, वह कभी भी बिगाड़ को पसन्द नहीं कर सकता।

**( महान इस्लामी विद्वान एवं लेखक**
**मुहम्मद फारूक़ ख़ाँ, अनुवादक- कुरआन (हिन्दी)**

✷ ✷ ✷

**हम निम्नलिखित बातों को आचार, विचार एवं व्यवहार में लाने का प्रयत्न करें जिससे हमें मानसिक तनाव को कम करने में और उस के समाधान में सहायता मिलेगी।**

1. सब धर्मों के महापुरुषों का आदर कीजिए।
2. सब धर्मों के मुख्य ग्रंथों का अध्ययन कीजिए।
3. आकाशीय ग्रन्थों की खोज कीजिए।
4. मानिये भले ही किसी एक धर्म को, जानकारी सब धर्मों की हासिल कीजिए।
5. ईश्वर के नामों में झगड़ा न कीजिए।
6. फासले कम कीजिए, दीवारें छोटी कीजिए।
7. मतैक्य हो उन सिद्धान्तों में एकता बढ़ाइये।
8. धर्म जोड़ने वाली शक्ति है, तोड़ने में उसका उपयोग कभी न कीजिए।

✷ ✷ ✷

जमाअते इस्लामी हिन्द
लाला बाज़ार–फतेहपुर (यू.पी.)